शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2024
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

# विश्वनाथ प्रसाद तिवारी द्वारा रचित संस्मरण : 'एक नाव के यात्री'

कु.ज्योति बोवालकर (शोधार्थी)
कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय
हिंदी अनुसंधान केंद्र
सांखली, गोवा, भारत

शोध संक्षेप

*'एक नाव के यात्री' विश्वनाथ प्रसाद तिवारी द्वारा साहित्यकारों पर लिखे गए संस्मरणों एवं साक्षात्कारों का संग्रह है। प्रस्तुत रचना में भी लेखक ने अपने जीवन में आनेवाले विशिष्ट व्यक्तियों की अनेक स्मृतियों को शब्दबद्ध किया है। इस संस्मरण में कुल आठ संस्मरणों एवं चार साक्षात्कारों का समावेश है जिनके शीर्षक सम्बद्ध साहित्यकारों के जीवन और उनकी रचनाओं से प्रेरित हैं। तिवारी जी ने विभिन्न साहित्यकारों से जुड़े अपने अविस्मरणीय क्षणों को बड़े ही रागात्मक रूप से सहजकर प्रस्तुत किया है। सम्बद्ध साहित्यकारों के व्यक्तित्व के विविध पक्षों को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर उनके जीवन का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है।*

बीज शब्द : *संस्मरण, साक्षात्कार, जिजीविषा, साहित्यकार, विचारधारा, व्यक्तित्व, प्रवाहपूर्ण, अभिव्यक्त*

## प्रस्तावना

'एक नाव के यात्री' विश्वनाथ प्रसाद तिवारी द्वारा साहित्यकारों पर लिखे गए संस्मरणों एवं साक्षात्कारों का संग्रह है जिसका प्रकाशन सन् 2001 में हुआ था। इस पुस्तक में विविध साहित्यकारों के संस्मरणों के साथ.साथ कुछ साक्षात्कार भी सम्मिलित हैं। यह रचना एक प्रकार से युगीन साहित्यकारों के महत्व को संस्मरणा शैली में अभिव्यक्त करने का एक सफल प्रयोग है, जहाँ संस्मरण एवं साक्षात्कार के माध्यम से सम्बद्ध साहित्यकार के व्यक्तिव की विशेषताएँ, उनका साहित्यिक योगदान, साहित्य से जुड़े अनेक प्रश्न, समस्याएँ एवं उनके समाधान आदि विभिन्न विषयों पर चर्चा की गयी है। इस रचना में हम साहित्य का समकालीन परिदृश्य प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप में देख सकते हैं। चूँकि संस्मरण विधा अतीत की स्मृतियों पर आधारित होती है, प्रस्तुत रचना में भी लेखक ने अपने जीवन में आनेवाले विशिष्ट व्यक्तियों की अनेक स्मृतियों को शब्दबद्ध किया है।

## संस्मरणों का विश्लेषण

इस संस्मरण में कुल आठ संस्मरणों एवं चार साक्षात्कारों का समावेश है, जिनके शीर्षक सम्बद्ध साहित्यकारों के जीवन और उनकी रचनाओं से प्रेरित है। संस्मरणों की शुरुआत 'मानव ही मानव की तीसरी आँख है' से होती है। जिसमें लेखक अज्ञेय जी के साथ व्यतीत किए कुछ क्षण प्रस्तुत करते हैं। यह क्षण अज्ञेय जी के निवास स्थान दिल्ली, लेखक के निवास स्थान गोरखपुर एवं अन्य साहित्यिक गोष्ठियों में भेंट के दौरान के हैं। इन चुनिंदा क्षणों के माध्यम से अज्ञेय जी के व्यक्तित्व की भिन्न-भिन्न छटाएँ उभरकर सामने आती हैं। एक युगदृष्टा साहित्यकार के साथ-साथ निर्भीक पत्रकार, गरिमामय व्यक्तित्व के धनी अज्ञेय पाठकों के सम्मुख आते हैं। दूसरा अध्याय 'मृत्योर्मोमृतं गमय अमृतलाल नागर जी

पर केन्द्रित संस्मरण है। उनके बारे में लेखक लिखते हैं, "नागर जी का सीधापन उनके व्यक्तित्व की विशेषता थी। वे एक सहज व्यक्ति थे।"1 इस संस्मरण में एक साहित्यकार एवं कलाकार की जिजीविषा प्रकट हुई है। जीवन की तमाम जटिलताओं के बावजूद संघर्षरत रहना, मृत्यु के पश्चात भी अपनी रचनों के माध्यम से अमरता प्राप्त करने की आकांक्षा व्यक्त हुई है।

अगला संस्मरण 'राजनीति के जलसागर में भटका मेघ' श्रीकांत वर्मा एवं लेखक के बीच की साहित्यिक घनिष्ठता का परिचय देता है। लेखक साहित्यिक रूप में श्रीकांत वर्मा के प्रशंसक हैं, किन्तु उनका राजनीति से सरोकार लेखक को खटकता है। उन्हें लगता है कि श्रीकांत वर्मा बहुत कुछ लिखना चाहते थे। लेखन के प्रति उनकी तड़प स्पष्ट दिखाई पड़ती थी। लेकिन राजनीति की व्यस्तता के चलते वे अधिक लिख नहीं पाए और अल्पायु में ही निधन के कारण उनकी लेखन की इच्छा भी पूरी न हो सकी।

चौथे संस्मरण 'आँगन के पंछी' में विद्यानिवास मिश्र के व्यक्तिव के विभिन्न रूपों की झाँकी प्रस्तुत की गयी है। उनके कर्मठ स्वभाव, योजनाबद्ध कार्यप्रणाली, सभी के प्रति आत्मीयता, परिवारिक भावुकता आदि गुणों का यथोचित घटनाओं के साथ वर्णन मिलता है। वे विद्यानिवास मिश्र को आँगन के पंछी मानते हैं जो मन से तो बंजारा है फिर भी आँगन से, अपनी मिट्टी से अपनी भाषा से जुड़े हुए हैं।

पांचवें संस्मरण 'श्रीजी भजै या खीझि' में नामवर सिंह के जीवन संघर्ष, उनकी साहित्यिक यात्रा एवं आलोचना पद्धति पर लेखक चर्चा करते हैं। उनकी आलोचना पद्धति की सराहना करते हुए वे कहते हैं, "वे हिंदी के उन थोड़े से आलोचकों में हैं, जिनकी आलोचना पढ़ने की इच्छा होती है।"2

'अच्छी कुंठा रहित इकाई' में ठाकुरप्रसाद सिंह से जुड़ी उनकी यादें हैं। कुंठा मुक्त सहजता उनके व्यक्तित्व की रीढ़ थी और इससे लेखक बहुत प्रभावित थे। असाध्य रोगों से पीड़ित होने के बावजूद उन्होंने अपनी शाश्वत हास्य मुद्रा बरकरार रखी। उनकी इसी ज़िंदादिली के लेखक भी कायल थे।

'एक नाव के यात्री' इस संस्मरण में लेखक परमानंद श्रीवास्तव के साथ-साथ अपने जीवन की कहानी भी सुनाते हैं। एक ही विभाग में कार्यरत दो व्यक्तियों के बीच आत्मीयता, घनिष्ठता के संबंध आगे चलकर क्या रूप लेते हैं, किस प्रकार से दोनों में अंतर निर्माण होता है यह संस्मरण इसका कथा विस्तार है।

'न मानुषत श्रेष्ठतरं हि किंचित' अर्थात मनुष्य से बढकर इस संसार में और कुछ नहीं है। यह आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी पर केंद्रित संस्मरण है। द्विवेदी जी के व्यक्तित्व ने लेखक को विशेष रूप से प्रभावित किया है। प्रस्तुत संस्मरण लेखक की द्विवेदी जी हुई संक्षिप्त भेंट के दौरान की वैचारिक चर्चा पर आधारित है। अशक्त एवं बीमार होते हुए भी साहित्य एवं साहित्यिक विचार गोष्ठियों में सक्रिय रूप से सहभाग लेना उनकी साहित्य अभिरुचि को प्रकट करता है।

'टूटा चाकू और लहराता समुद्र' यह सेठ गोविंदादस के साथ की गयी बातचीत है, जिसमें देश में हिंदी भाषा की स्थिति, हिंदी भाषा के विकास के लिए सरकार और जनता के क्या कर्तव्य और प्रयास होने चाहिए आदि विषयों को लेकर चर्चा की गयी है।

अगला साक्षात्कार है 'साहित्य असीम की देहरी है' यह अज्ञेय जी के साथ उनके निवास स्थान पर हुई बातचीत पर आधारित है जिसमें वे अज्ञेय जी से साहित्य सृजन, आलोचना, चिंतन,

सामाजिक प्रतिबद्धता आदि विषयों के संदर्भ में वार्तालाप करते हैं। अमृतलाल नागर पर केंद्रित साक्षात्कार 'जब तक जिंदा रहूँ लिखता रहूँगा में गांधी, नेहरू, मार्क्स आदि की विचारधारा का उनके साहित्य सृजन पर पड़े प्रभाव की विस्तृत रूप से चर्चा की गयी है। लेखक जब साहित्यकारों के संपर्क-प्रभाव पर पूछते हैं तो नागर जी जवाब देते हैं, "उन दिनों छापे हुये नाम के पीछे मैं वैसा भागता था जैसे आज के लड़के सिनेमा के पीछे भागते हैं।"3

'परंपरा का मूल्यांकन' रामविलास शर्मा पर आधारित साक्षात्कार है जहाँ पर लेखक उनकी मार्क्सवादी विचारधारा, सत्ता और साहित्यकार का संबंध, समकालीन साहित्य, राष्ट्रीय एकता तथा उनकी संगीत एवं खान-पान की रुचियों पर उनसे वार्तालाप करते हैं।

इस कृति के माध्यम से विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने विभिन्न साहित्यकारों से जुड़े अपने अविस्मरणीय क्षणों को बड़े ही रागात्मक और सहज रूप में प्रस्तुत किया है। सम्बद्ध साहित्यकारों के व्यक्तित्व के विविध पक्षों को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर उनके जीवन का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। तिवारी जी की कोशिश रही है कि जिन साहित्यकारों के वे संस्मरण प्रस्तुत कर रहे हैं उनका व्यक्तित्व विश्लेषण अतिरंजक या अतिशयोक्तिपूर्ण न लगे। उन्होंने किसी भी साहित्यकार को 'शुगर कोट' कर प्रस्तुत नहीं किया है। जहाँ-जहाँ जिस रचनाकर की बात खटकी है या दोषपूर्ण लगी है उसे सहजता से व्यक्त किया है। वे संस्मरणों में साहित्यकारों के प्रति प्रशंसा के रंग तो नहीं भरते लेकिन प्रत्येक रचनाकर के प्रति आत्मीयता के भाव जरूर रखते हैं।

प्रामाणिकता संस्मरण विधा का प्राण होती है, जहाँ पर कल्पना के लिए कोई स्थान नहीं होता। इस संस्मरण की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें अतीत की स्मृतियों एवं घटनाओं को केवल अभिव्यक्त ही नहीं किया गया है वरन् वे घटनाएँ संस्मरण में यथावत तिथियों और संदर्भों के साथ आयी है जो इस संस्मरण को अधिक प्रामाणिक बनाती हैं।

इस संस्मरण की एक और विशेषता है, घटनाओं की चित्रात्मक रूप में अभिव्यक्ति! चाहे वह साहित्यकार के व्यक्तित्व का विश्लेषण हो या किसी प्रसंग का वर्णन, लेखक शब्दों की बुनावट इस प्रकार से करते हैं कि शब्द चित्र बनकर हमारे समक्ष उभरकर आते हैं। इनकी भाषा संस्कृतनिष्ठ तत्सम शब्दों से भरपूर होने पर भी क्लिष्ट नहीं है। इसमें साहित्यकारों के व्यक्तित्व का चित्रण करते समय सार्थक विशेषणों, विशिष्ट उपमाओं, ध्वन्यात्मक शब्दों का यथोचित प्रयोग हुआ है। यहाँ लेखक का सूक्ष्म निरीक्षण सराहनीय है जिससे वे साहित्यकारों से जुड़ी स्मृतियों को बहुत रोचकए प्रभावशाली एवं प्रवाहपूर्ण शैली में अभिव्यक्त करते हैं। यदि इस कृति में निहित साक्षात्कारों पर दृष्टि डालें तो एक विधा की रचना में दूसरी विधा की रचना को स्थान देना अटपटा लगता है और यह प्रश्न भी उठ सकते हैं कि संस्मरणात्मक रचना में साक्षात्कार क्यों ? इस संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि लेखक की ओर से किया गया यह एक प्रयोग है जो संभवतः इन संस्मरणों को अधिक पुख्ता बनाने का प्रयास है।

जिस प्रकार सोना आग में तपकर निखरता है उसी प्रकार साहित्यकार भी अपनी परिस्थितियों से उपजा होता जो संघर्षरत होकर समाज को नई जीवन दृष्टि प्रदान करता है। इन्हीं संदर्भों में

'एक नाव के यात्री' में संकलित संस्मरण एवं साक्षात्कार सिर्फ संबद्ध साहित्यकारों से जुड़े स्मरण संदर्भ मात्र नहीं हैं बल्कि वे उनके भीतर की मनुष्यता, आत्मीयता एवं साहित्यिकता के भी परिचायक हैं। इस कृति में सम्बद्ध साहित्यकारों की जिजीविषा व्यक्त हुई है जो हमें जीवन की तमाम जटिलताओं के बावजूद संघर्षत रहने की प्रेरणा देती है ।

## संदर्भ ग्रंथ

*1 विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, एक नाव के यात्री, 2001, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली*

*2 रेवती रमण विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, 2016, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली*

*3 सिंह डॉ सुनील, हिंदी का कथेतर गद्य सर्जना, 2013, नमन प्रकाशन*

*4 संपादक, अरविन्द त्रिपाठी, 1997, स्वप्न और यथार्थ के कवि : विश्वनाथ प्रसाद तिवारी*

*5 डॉ. जितेन्द्र पाण्डेय, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी का काव्य*